बच्चों को दूध न पचने का जिनेटिक कारण

कई बच्चों को एक उम्र के बाद दूध पचाने में दिक्कत होती है। आम तौर पर स्तनपान छूटने के बाद की अवधि में यह स्थिति देखी गई है। अब शोधकर्ताओं ने इस दिक्कत का जिनेटिक कारण खोज निकाला है।

दरअसल, दूध पचाने में दिक्कत का सम्बंध दूध के एक विशेष घटक लैक्टोस नामक शर्करा से है। इसे पचाने के लिए आंतों में लेक्टेस नामक एंज़ाइम की ज़रूरत होती है। कई व्यक्तियों में यह एंज़ाइम बचपन में तो बनता है मगर उम्र बढ़ने के साथ इसका निर्माण कम होता जाता है। आंकड़े दर्शाते हैं कि भारत में ऐसे लोग कुल आबादी में 20-40 प्रतिशत तक हैं।

आर.ए.एच. कुचे व उनके साथियों ने 1 से 16 वर्ष उम्र के 176 बच्चों की आंतों के ऊतक के नमूने के विश्लेषण के आधार पर इस दिक्कत का जिनेटिक आधार पहचानने की कोशिश की है। उन्होंने पाया कि लेक्टेस बनाने वाले जीन के कई रूप होते हैं। इनमें से एक रूप है सी/टी-13910। यह रूप मौजूद हो, तो व्यक्ति की आंतों में लेक्टेस की उच्च सक्रियता पाई जाती है।

दूसरी ओर, यदि इसी जीन का सी/सी-13910 रूप हो, तो लेक्टेस का निर्माण नहीं हो पाता।

शोधकर्ताओं ने पाया कि सी/सी-13910 की उपस्थिति में लैक्टोस पचाने में दिक्कत सामने आती है। उन्हें जीन का सी/सी-13910 रूप करीब 56 प्रतिशत में बच्चों में मिला, जबकि 41 प्रतिशत बच्चों में सी/टी-13910 रूप मिला। यह भी देखा गया कि पांच साल से कम उम्र में दोनों ही जीन रूप उच्च लेक्टेस सक्रियता दर्शाते हैं। 5 साल की उम्र के बाद ही दोनों जीन रूपों की गतिविधि में अंतर पैदा होते हैं।

इन परिणामों के आधार पर शोधकर्ताओं का विचार है कि भारतीय बच्चों में लैक्टोस अपच की समस्या के निदान के लिए पांच वर्ष से कम उम्र में ही इन जीन्स का स्क्रीनिंग किया जा सकता। वैसे यह अनावश्यक ही लगता है क्योंकि ऐसा करके समस्या तो वहीं की वहीं रहेगी। और तो और, इसे समस्या मानने का भी कोई कारण नहीं है क्योंकि यह तो एक सामान्य चयापचय का लक्षण है। ***(स्रोत फीचर्स)***